



Pradeep

05 Mar 1987

07:15 AM

Jeypore

Model: Baby-Horoscope

Order No: 112920

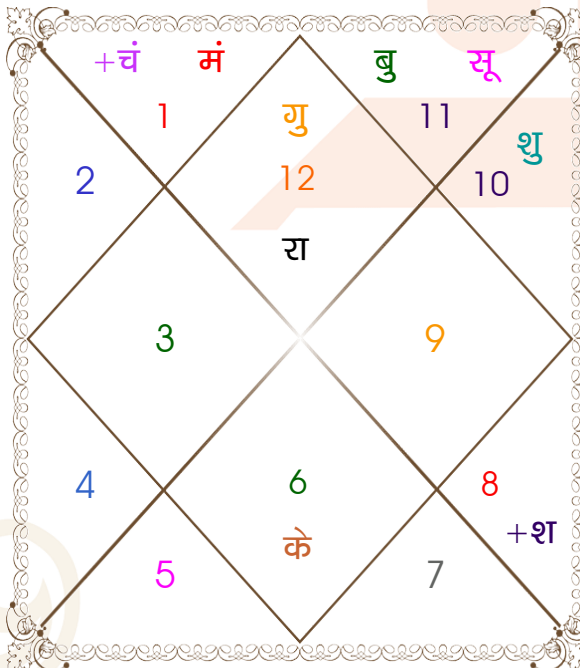
तिथि 05/03/1987 समय 07:15:00 वार गुरुवार स्थान Jeypore चित्रपक्षीय अयनांश : 23:40:37
अक्षांश 18:51:38 उत्तर रेखांश 82:33:03 पूर्व मध्य रेखांश 82:30:00 पूर्व स्थानिक संस्कार 00:00:12 घंटे

पंचांग	अवकहड़ा चक्र
साम्पातिक काल : 18:04:20 घं	गण _____: मनुष्य
वेलान्तर _____: 00:11:41 घं	योनि _____: गज
सूर्योदय _____: 06:16:51 घं	नाड़ी _____: मध्य
सूर्यास्त _____: 18:06:18 घं	वर्ण _____: क्षत्रिय
चैत्रादि संवत _____: 2043	वश्य _____: चतुष्पाद
शक संवत _____: 1908	वर्ग _____: मृग
मास _____: फाल्गुन	र्युंजा _____: पूर्व
पक्ष _____: शुक्ल	हंसक _____: अग्नि
तिथि _____: 6	जन्म नामाक्षर _____: ले-लेखपाल
नक्षत्र _____: भरणी	पाया(रा.-न.) _____: रजत-स्वर्ण
योग _____: ऐन्द्र	होरा _____: गुरु
करण _____: कौलव	चौघड़िया _____: शुभ

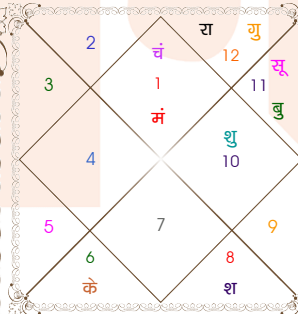
विंशोत्तरी	योगिनी
शुक्र 5वर्ष 4मा 13दि	भद्रिका 1वर्ष 4मा 3दि
राहु	भामरी
18/07/2015	08/07/2015
17/07/2033	08/07/2019
राहु 30/03/2018	भामरी 17/12/2015
गुरु 23/08/2020	भद्रिका 07/07/2016
शनि 30/06/2023	उल्का 08/03/2017
बुध 16/01/2026	सिद्धा 17/12/2017
केतु 03/02/2027	संकटा 06/11/2018
शुक्र 03/02/2030	मंगला 17/12/2018
सूर्य 29/12/2030	पिंगला 08/03/2019
चन्द्र 29/06/2032	धान्या 08/07/2019
मंगल 17/07/2033	

ग्रह	व अ	अंश	राशि	नक्षत्र	पद	स्वामी	अं.	स्थिति	षट्बल	चर	स्थिर	ग्रह तारा
लग्न		07:42:26	मीन	उ०भाद्रपद	2	शनि	केतु	---	0:00			
सूर्य		20:16:24	कुंभ	पू०भाद्रपद	1	गुरु	गुरु	शत्रु राशि	1.19	भात्	पितृ	साधक
चंद्र		23:05:13	मेष	भरणी	3	शुक्र	शनि	सम राशि	1.17	अमात्य	मातृ	जन्म
मंगल		14:53:27	मेष	भरणी	1	शुक्र	शुक्र	स्वराशि	1.38	मातृ	भात्	जन्म
बुध	व अ	09:35:27	कुंभ	शतभिषा	1	राहु	गुरु	सम राशि	1.20	पुत्र	ज्ञाति	प्रत्यारि
गुरु		06:52:00	मीन	उ०भाद्रपद	2	शनि	बुध	स्वराशि	1.42	कलत्र	धन	वध
शुक्र		08:21:49	मक	उत्तराषाढा	4	सूर्य	शुक्र	मित्र राशि	1.02	ज्ञाति	कलत्र	सम्पत
शनि		26:55:11	वृश्चि	ज्येष्ठा	4	बुध	गुरु	शत्रु राशि	0.99	आत्मा	आयु	मित्र
राहु		18:06:07	मीन	रेवती	1	बुध	बुध	सम राशि	---		ज्ञान	मित्र
केतु		18:06:07	कन्या	हस्त	3	चंद्र	बुध	शत्रु राशि	---		मोक्ष	विपत

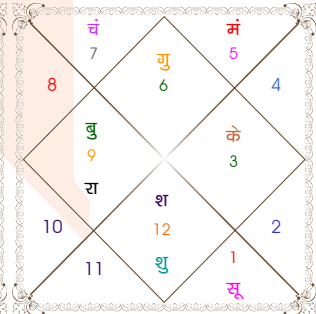
लग्न-चलित



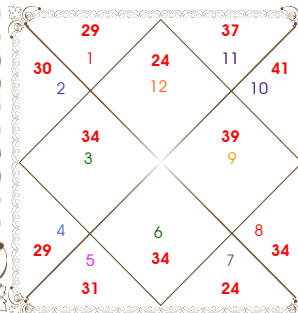
चन्द्र कुंडली



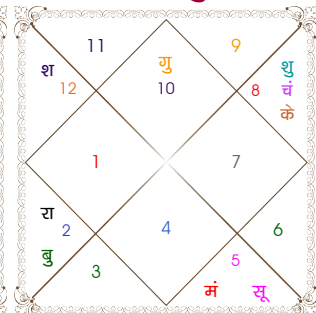
नवमांश कुंडली



सर्वाष्टकवर्ग



दशमांश कुंडली



नक्षत्रफल

आप भरणी नक्षत्र के तृतीय चरण में उत्पन्न हुए हैं। अतः आपकी जन्म राशि मेष तथा राशि स्वामी मंगल होगा। नक्षत्रानुसार आपका वर्ण क्षत्रिय, गण मनुष्य, नाडी मध्य, योनि गज तथा वर्ग मृग होगा। भरणी नक्षत्र के तृतीय चरण में जन्म होने के कारण आपका राशिनाम "ले" से होगा। यथा लेखराज।

भरणी नक्षत्र में जन्म होने के कारण आप मनोरंजन के कार्यक्रमों यथा गीत, संगीत, नाटक तथा खेल कूदों के अधिक शौकीन होंगे तथा इन्हीं कार्यों पर अपना अधिकांश समय व्यतीत करेंगे। जल से आप नैसर्गिक रूप से भयभीत रहेंगे। यहां तक स्नानादि की इच्छा का भी यदा कदा अभाव रहेगा। आप चंचल प्रकृति के व्यक्ति होंगे तथा लोगों से मधुरता का व्यवहार अल्प मात्रा में ही करेंगे।

सदापकीर्ति हिं महापवादैनाना विनोदैश्च विनीतकालः।

जलातिभीरुश्चपलः खलश्च प्राणी प्रणीतोभरणीजातः।।

जातकाभरणम्

अर्थात् भरणी में उत्पन्न जातक लोकोपवाद से अपयश पाने वाला, अपने समय को नाना प्रकार के खेल या विनोद द्वारा व्यतीत करता है। यह जल से भीरु, चंचल प्रवृत्ति तथा दुष्ट स्वभाव वाला होता है।

आप अपने संकल्प के पक्के होंगे तथा जो निश्चय एक बार कर लेंगे उसे पूरा करके ही छोड़ेंगे। सत्य का आप हमेशा पालन करेंगे। शरीर आपका स्वस्थ रहेगा तथा रोगों का अभाव रहेगा तथापि यदा कदा रोग ग्रस्त रहेंगे। कार्य आप जो भी करेंगे चतुराई से सम्पन्न करेंगे तथा सामान्य जीवन आपका समस्त सुखों से पूर्ण होकर व्यतीत होगा।

कृत निश्चयः सत्यारूढक्षः सुखितश्च भरणीषु।

बृहज्जातकम्

अर्थात् भरणी नक्षत्र में जन्मा जातक सत्यवक्ता, बात का पक्का, रोगरहित और कार्यकलाप में चतुर होता है।

कभी कभी आपका स्वभाव अनावश्यक रूप से जिददी बन जाता है। जो हठ करते हैं उसे छोड़ते नहीं हैं। इससे अन्य जनों को भी परेशानी होगी। सम्पत्ति या धन दौलत तथा वैभव का आपको जीवन भर अभाव नहीं रहेगा। धनार्जन पर्याप्त मात्रा में होगा तथा शरीर की आरोग्यता बनी रहेगी। मुखाकृति भी आपकी निश्चित रूप से दर्शनीय होगी।

अरोगी सत्यवादी च सम्पद्युक्तो दृढव्रतः।

भरण्यां जायते लोकः सुमुखश्च सुनिश्चितम्।।

जातक दीपिका

अर्थात् भरणी नक्षत्र में उत्पन्न मनुष्य रोग रहित, सत्यवादी, सम्पत्तिशाली और हठव्रती होता है। उसका मुख सुन्दर होता है। यह सुनिश्चयी होते है।

आप समय समय पर मानसिक तथा शारीरिक व्याकुलता का अनुभव करेंगे तथा लोग आपके चरित्र पर भी कभी कभी सन्देह प्रकट करेंगे। आप के हृदय में यदा कदा कठोरता का भाव भी रहेगा। आपके पास धन पर्याप्त मात्रा में रहेगा तथा संसार में धनवान बन कर रहेंगे।

**याम्यर्क्षे विकलोळन्यदारनिरतः कूरः कृतध्नो धनी ।
जातकपरिजातः**

अर्थात् भरणी नक्षत्र में उत्पन्न बालक शारीरिक तथा मानसिक रूप से व्याकुल, दूसरे की स्त्री में अनुरक्त, कूर तथा कृतधन एवं धनी होता है।

आप का जन्म रजत पाद में हुआ है। अतः धन सम्पत्ति से आप सर्वदा सुसम्पन्न रहेंगे तथा जीवन में आपके पास इसका अभाव नहीं रहेगा। साथ ही समस्त भौतिक सुखसंसाधनों को आप प्राप्त करेंगे एवं सुखपूर्वक इनका उपभोग भी करेंगे। आप एक बुद्धिमान पुरुष होंगे तथा दानशीलता की प्रवृत्ति भी आपके मन में नित्य विद्यमान रहेगी। साथ ही सहनशीलता के भाव से भी आप युक्त रहेंगे। आप अपने सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में प्रायः सफलता ही अर्जित करेंगे। आप की शारीरिक कान्ति दर्शनीय रहेगी तथा मुखकृति सुन्दर एवं आकर्षक होगी। समाज में आप एक आदरणीय एवं श्रद्धेय पुरुष समझे जायेंगे। आप विस्तृत परिवार के भी स्वामी होंगे। अपने सम्भाषण में आप नित्य प्रिय एवं मधुर वाणी का उपयोग करेंगे तथा सभी प्रकार के सांसारिक सुखों का प्रसन्नता पूर्वक उपभोग करेंगे। विद्याध्ययन में आप रुचिशील रहेंगे तथा एक विद्वान के रूप में भी आप ख्याति प्राप्त करेंगे। इसके साथ ही आप अल्प मात्रा में बोलना पसन्द करेंगे।

मेष राशि में पैदा होने के कारण आप अल्प मात्रा में भोजन करने वाले होंगे। तथा आप अपने अन्य भाई-बहनों में अकेले श्रेष्ठ रहेंगे।

**मेषस्थे यदि शीतगौ च लघुभुक् कामी महोत्थाग्रजो । ।
जातकपरिजातः**

आपका शरीर ताम्रवर्ण के समान गौरवर्ण का होगा तथा आर्से लालिमा युक्त गोलाकार होंगी। आपके सिर पर किसी चोट या घाव का निशान हो सकता है।

सिर पर अल्प केश होंगे तथा हाथ पैर कमल की कान्ति के समान सुन्दर होंगे। जल से आप स्वभाविक रूप से भय करेंगे। धन को आप सम्मान समझेंगे तथा उसे इससे भी अधिक महत्व प्रदान करेंगे। साहस एवं बुद्धि का आपके पास अभाव नहीं होगा जो भी कार्य करेंगे साहस तथा बुद्धिबल से उसे पूर्ण करेंगे। पुत्रों, सहयोगियों तथा मित्रों की आपके पास कभी भी कमी नहीं होगी। ये बड़ी संख्या में आपके साथ हमेशा रहेंगे। स्त्री वर्ग से आप पराजित रहेंगे। आपका व्यवहार अन्य लोगों के प्रति भी स्नेहशील रहेगा। जिससे आप समाज में मान सम्मान तथा आदर प्राप्त करेंगे।

सौववर्णाङ्गः स्थिरस्वः सहजविरहितः साहसी मानभद्रः ।
कामार्तः क्षामजानुः कुनखतनुकचश्चञ्चलो मानवित्तः ।।
पद्माभैः पाणिपादैर्वितत सुतजनो वर्तुलाकारनेत्रः ।
सस्नेहतोयभीरु व्रणविकृतशिराः स्त्रीजितो मेष इन्दौ ।।

सारावली

आप शीघ्र ही नाराज हो जाएंगे परन्तु जल्दी प्रसन्न भी हो जाएंगे यह आपकी स्वाभाविक प्रवृत्ति होगी। आप भ्रमण प्रिय होंगे तथा सैर सपाटा करना आपको अच्छा लगेगा। आपकी हथेली में शौर्य सूचक चिन्ह यथा चक्र पताका आदि हो सकते हैं। आप स्त्रियों के अति प्रिय तथा सम्माननीय होंगे। दूसरे लोगों की सेवा करना तथा उन्हें सहयोग प्रदान करना आप अपना विशिष्ट कर्तव्य समझेंगे चाहे आपकी परिस्थितियां कैसी ही हों इसकी आप चिन्ता नहीं करेंगे।

वृताताम्रदृग्गुष्णशाकलघुभुक् क्षिप्रप्रसादोदनः ।
कामी दुर्बलजानुरास्थिरधनः शूरोङ्गना बल्लभः ।।
कुनखी व्रणाङ्कितशिरा मानी सहोत्थाग्रजः ।
शक्त्यापणितलेडतोळति चपलस्तोये च भीरुः किये ।।

बृहज्जातकम्

धन को अनावश्यक महत्व प्रदान करना से आपके बुजुर्ग तथा श्रेष्ठ संबंधी असन्तुष्ट होंगे। इसके फलस्वरूप या तो वे आपसे अलग हो सकते हैं या आप खुद उनसे अलग होंगे। आपके घर के सारे कार्य चूंकि अपनी पत्नी के सलाह से ही सम्पन्न होंगे तथा दूसरे लोगो की राय को कोई महत्व नहीं देंगे। अतः यह भी एक अलगाव का मुख्य कारण बनेगा। धन पुत्र तथा वैभव से आप हमेशा युक्त रहेंगे तथा समाज में अपने वैभव से कीर्ति प्राप्त करेंगे।

स्थिरधनोः रहितः सुजनैर्नरः सुतयुतः प्रमदा विजितो भवेत् ।
अजगतो द्विजराज इतीरितं विभुतयाद्भुतया स्वसुकीर्तिभाक् ।।

जातकाभरणम्

भ्रमण के लिए आप ऐसे स्थान पर जाना पसन्द करते हैं जो अगम्य हो अर्थात् जहां आसानी से नहीं पहुँचा जा सकता हो। सामाजिक संबंध भी आपके विस्तृत होंगे। अतः अवसरानुकूल आप अभक्ष्य पदार्थों अर्थात् मांस, मदिरा आदि का भी भक्षण या सेवन कर सकते हैं।

मेघे त्वगम्यागमनप्रियश्च त्वभक्ष्यभक्षयोः ।
वृहत्पाराशर होराशास्त्र

आपके स्वभाव में कभी कभी उग्रता की झलक भी देखने को मिलेगी। लेकिन जब कभी आप अनावश्यक उग्रता का प्रदर्शन करेंगे आपके लिए समस्याएं उत्पन्न होंगी। आपकी प्रवृत्ति चंचल होगी तथा मौका पड़ने पर आप मिथ्या भाषण भी करेंगे।

वृत्क्षणो दुर्बलजानुरुग्रो भीरुर्जले स्याल्लघुभुक् सुकामी ।
संचारशीलश्चपलोडनुतोक्ति व्रणाङ्कितः कियभे प्रजातः ॥

फलदीपिका

यौगिक क्रियाएं आपको रुचिकर लगेगी। आपके सिर में अल्प मात्रा में केश होंगे। पित्त या गरमी प्रदान करने वाले प्रदार्थों का परहेज रखे नहीं तो मस्तिष्क विकार का भी योग बनता है। साथ ही शरीर की सुरक्षा का भी पूरा ध्यान रखें।

भवति विकलकेशो योगकर्मानुशीलो ।
न भवति सुसमृद्धो नैव दारिद्र्य युक्तः ॥
व्रजति च सविकारं भूतियुक्तः प्रलापी ।
संभवति पुरुषोळ्यं मेष राशौ ॥

जातक दीपिका

आपका जन्म मनुष्य गण में हुआ है। अतः आप धार्मिक प्रवृत्ति के व्यक्ति होंगे। ब्राह्मणों तथा देवताओं की आप श्रद्धापूर्वक सेवा करेंगे। अभिमान भी आपके स्वभाव में रहेगा। धन की आपके पास कमी नहीं रहेगी। दया का भाव आपके अन्तःकरण में विद्यमान रहेगा तथा दीन दुःखियों के प्रति आप विशेष रूप से दयालु रहेंगे। आप शरीर से वलिष्ठ रहेंगे। आप कई कलाओं या कार्यों में निपुण हो सकते हैं। ज्ञानार्जन में आपकी गहन रुचि होगी। शरीर आपका कान्तियुक्त रहेगा तथा आपके द्वारा कई लोगों को सुख प्राप्त होगा।

लोलनेत्रः सदा रोगी, धर्मार्थकृत निश्चयः ।
पृथुजङ्घः कृतघ्नश्च निष्पापो राजपूजितः ॥
कामिनीहृदयानन्दो दाता भीतो जलादपि ।
चण्ळकर्मा मृदुश्चान्ते मेषराशौ भवेन्नरः ॥

मानसागरी

मान सम्मान से आप हमेशा परिपूर्ण रहेंगे तथा आजीवन विपुल धन के स्वामी बने रहेंगे। आखें आपकी बड़ी बड़ी होंगी तथा निशानेबाजी में सिद्धहस्त होंगे। शरीर का वर्ण गौरवर्ण होगा तथा नगरवासियों को आप वश में करने वाले होंगे। आप नगर के सम्मानीय नेता या अधिकारी भी हो सकते हैं।

देवद्विजार्चाभिरतोभिमानी दयालुर्बलवान कलाज्ञः ।
प्राज्ञः सुकान्ति सुखदो बहूनां मर्त्याभवे मर्त्यगणे प्रसूतः ॥

जातकाभरणम्

अर्थात् मनुष्य गण में उत्पन्न जातक ब्राह्मण तथा देवताओं का भक्त, अभिमानी, दयालु, बलवान, कला का ज्ञाता, विद्वान, कान्तियुक्त तथा बहुत से मनुष्यों को सुख तथा आश्रय प्रदान करने वाला होता है।

गजयोनि में जन्म लेने के कारण आप राजा के प्रिय होंगे अर्थात् बड़े बड़े मंत्रियों

तथा अधिकारियों से आपके मित्रतापूर्ण संबंध होंगे तथा वे सब आपका सम्मान करेंगे। आप आत्मबल, बाहुबल तथा बुद्धिबल से सुशोभित रहेंगे तथा अपने सारे कार्य आप अपने ही बल पर सुसम्पन्न करेंगे। समस्त भौतिक तथा सांसारिक सुखों का आप उपभोग करेंगे। आप किसी मंत्री या उच्चाधिकारी के सहयोगी या खुद भी उच्चाधिकारी हो सकते हैं। आपकी प्रवृत्ति उत्साही रहेगी तथा इसी प्रवृत्ति से आप उन्नत शिखर पर पहुँचेंगे।

**राजमान्यो बली भोगी भूपस्थान विभूषणः ।
आत्मोत्साही नरो जातः गजयोनौ न संशयः । ।
मानसागरी**

अर्थात् गजयोनि में उत्पन्न जातक राजमान्य, बली, भोगी, राज्यस्थान को सुशोभित करने वाला तथा उत्साही होता है।

आपके जन्म काल में चन्द्रमा द्वितीय भाव में स्थित है। अतः आपकी माता का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा एवं कोई विशेष शारीरिक रूग्णता नहीं रहेगी। वे आपको हमेशा धनार्जन एवं विद्याध्ययन संबंधी कार्यों में पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगी। साथ ही आपकी पारिवारिक उन्नति एवं पालन करने में भी उनकी मुख्य भूमिका रहेगी यदा कदा वे आपको नैतिक शिक्षा भी देंगी तथा आपके प्रति उनके हृदय में पूर्ण वात्सल्य का भाव रहेगा। इसके साथ ही जीवन में कई महत्वपूर्ण कार्यों की सिद्धि आप उनके सहयोग से ही करेंगे।

आप की भी माता के प्रति हादिक श्रद्धा रहेगी एवं उनकी आज्ञा पालन करने में आप गौरव की अनुभूति करेंगे। साथ ही जीवन में सर्वप्रकार से उनकी सेवा करना आप अपना कर्तव्य समझेंगे तथा समयानुसार उनको आर्थिक सहयोग भी प्रदान करते रहेंगे। अतः आपकी परस्पर संबंध मधुर रहेंगे एवं जीवन में एक दूसरों की सहायता एवं सहयोग का आदान प्रदान करके सुखानुभूति करेंगे।

आपके जन्म समय में सूर्य द्वादश भाव में स्थित है अतः आपके पिता का शारीरिक स्वास्थ्य सामान्य रूप से अच्छा रहेगा एवं यदा कदा शारीरिक अस्वस्थता भी रहेगी। आपके प्रति उनके मन में स्नेह का भाव रहेगा। धन सम्पत्ति से वे प्रायः युक्त ही रहेंगे एवं जीवन में शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपको नित्य अपना सहयोग प्रदान करते रहेंगे। दानशीलता की प्रवृत्ति से वे युक्त रहेंगे एवं आपको भी पुण्य कार्यों को करने की नित्य प्रेरणा प्रदान करते रहेंगे।

आप का भी उनके प्रति मन में पूर्ण आदर का भाव रहेगा एवं समयानुसार उनकी आज्ञा का आप अनुपालन करते रहेंगे। आपके आपसी संबंध अच्छे होंगे परन्तु बीच बीच में कभी सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न होंगे जिससे संबंधों में तनाव या कटुता आएगी लेकिन कुछ समय के उपरान्त स्वतः ही ठीक हो जाएगा। साथ ही आजीवन में हमेशा उनके सहयोग एवं सहायता के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे एवं उन्हें किसी भी प्रकार के कष्ट नहीं होने देंगे तथा समयानुसार आर्थिक या अन्य प्रकार की वांछित सहयोग भी प्रदान करेंगे।

आप के जन्म काल में मंगल द्वितीय भाव में स्थित है अतः आपके भाई बहिनों का

स्वास्थ्य मध्यम रहेगा एवं यदा कदा वे शारीरिक रूप से व्याकुलता की अनुभूति भी करते रहेंगे। आपके प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह भाव विद्यमान रहेगा। धनार्जन एवं विद्यार्जन संबंधी कार्यों में वे आपको पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे। साथ ही जीवन में अन्य महत्वपूर्ण एवं शुभ कार्यों में भी आपको उनका पूर्ण सहयोग एवं सद्भाव प्राप्त होगा।

आपके मन में भी उनके प्रति पूर्ण स्नेह की भावना रहेगी। आपके आपसी संबंध मधुर होंगे परन्तु यदा कदा उनमें आपसी मतभेदों के कारण अनिश्चित काल के लिए कटुता या तनाव का वातावरण होगा। जीवन में आप हमेशा भाई बहिनों का सुख दुःख में ध्यान रखेंगे तथा अपनी ओर से हमेशा उन्हें पूर्ण आर्थिक एवं अन्य रूप में सहयोग प्रदान करते रहेंगे।

कार्तिक मास, प्रतिपदा, षष्ठी, एकादशी तिथियां शुक्ल तथा कृष्ण दोनों पक्षों की, मघा नक्षत्र, रविवार, विष्कुम्भ योग, प्रथम प्रहर तथा मेष राशिस्थ चन्द्रमा यह समय आपके लिए अशुभ है अतः आप 15 अक्टूबर से 14 नवम्बर के मध्य, प्रतिपदा, षष्ठी, एकादशी तिथियों तथा मघा नक्षत्र एवं विष्कुम्भ योग में कोई भी शुभ कार्य न करें। इससे लाभ के स्थान पर हानि ही होगी। साथ ही रविवार प्रथम प्रहर तथा मेषराशिस्थ चन्द्रमा में भी कोई शुभ कार्य न करें अनिष्ट ही होगा तथा इन दिनों शरीर की सुरक्षा का भी पूरा ध्यान रखें।

जब समय आपके लिए अनुकूल न लग रहा हो मानसिक तथा शारीरिक विकलता का अहसास हो रहा हो, व्यापार में हानि, नौकरी या पदोन्नति में व्यवधान हो रहा हो तो ऐसे समय में आप को अपने इष्ट श्री हनुमान जी की आराधना करनी चाहिए। साथ ही सोना, तांबा, गैहू, गुड़, घी, लाल वस्त्र, रक्त वस्त्र आदि पदार्थों का दान करना चाहिए। तथा साथ ही मंगल के तांत्रिक मंत्र के 7000 जप करवाने चाहिए। इससे आपको मानसिक शान्ति प्राप्त होगी तथा अशुभ फलों के प्रभाव में भी न्यूनता आएगी। साथ ही मंगलवार के उपवास करने से भी शुभ फल प्राप्त होंगे।

ॐ क्रां क्रीं क्रो सः भौमाय नमः ।
मंत्र- ॐ ह्रूं शीं भौमाय नमः ।